आधुनिक समाज के लिए रामायण

संजय कुमार

जब हम त्रिविध दुःखों की चर्चा करते हैं अर्थात् त्रिविध दुःखों के अन्तर्गत आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक दुःखों के बारे में बात करते हैं तो इन त्रिविध दुःखों से प्रत्येक प्राणी छुटकारा पाना चाहता है। इन दुःखों के उपाय के सन्दर्भ में आज का मानव वर्तमान भोगवादी दुनिया में पाश्चात्यकरण के अन्धानुकरण में वह छुटकारा नहीं पा सकता है। हालांकि इन त्रिविध दुःखों के उपाय के परिणामस्वरूप अनेक दर्शनों ने अपने पृथक-पृथक् विचार रखे हैं। यद्यपि हमारे कर्मों और प्रारब्धा संस्कारों के कारण ये दुःख जीवन के अन्त तक बने रहते हैं तथापि वर्तमान युग में ऐसे बहुत सारे कष्टों, दुःखों, संघर्षों, दुनिधाओं व द्वन्द्वों से उबारने के लिए हमारी भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म का एक बहुत बड़ा ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' है जिसने कि पूर्व में भी विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है और आगे भी करता रहेगा।

इस लेख के अन्तर्गत मैं पाठकों को कहना चाहूँगा कि मेरे विचार यहाँ पर आपको ज्ञान देने की दृष्टि से नहीं प्रस्तुत कर रहा हूँ प्रत्युत इन विचारों को जीवन में लागू करने की दृष्टि से कह रहा हूँ ताकि हम इस महान् ग्रन्थ की उपादेयता को समझ सकें और एक श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण कर सकें।

वाल्मीकि रामायण के सांस्कृतिक महत्व को मैं आपके सामने रखना चाहूँगा। रामायण में पितृभक्ति, पुत्रप्रेम, स्वामिभक्ति, भ्रातृस्नेह इत्यादि मानवीय गुणों का एवं सत्य, धर्म, सदाचार, त्याग, कर्मफल सिद्धान्त, कर्त्तव्यनिष्ठा, मातृभूमि के प्रति प्रेम, समर्पण, अनन्त धैर्यशीलता आदि सामान्य गुणों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है।

इस प्रकार कुछे मानवीय गुणों की चर्चा करते हुए मैं अपने विचार आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ-

रामायण में कर्मफल की योजना-

वर्तमान युग में हम देखते हैं कि आज का मानव लोभ, लालच, भ्रष्टाचार, हठधर्मिता, पाप, झूठ इत्यादि इन दुर्गुणों को एक खेल-समझकर अपने जीवन में अपना लेता है। व्यक्ति भ्रष्टाचार करता है, झूठ बोलता है। लोग अन्यायपूर्वक धनसंचय करते हैं, आसुरी प्रवृत्ति के लोग बेईमानी, धेखेबाजी, विश्वासघात, टैक्स की चोरी आदि करके दूसरों का हक मारकर इस तरह अन्याय पाप करके धन का संचय करना चाहते हैं। हालांकि इन उपर्युक्त दुर्गुणों को करके मानव खूब पैसा कमा लेता है, धनवान हो जाता है, बडे पद पर चला जाता है लेकिन इन दुर्गुणों का प्रतिफल मनुष्य को अवश्य ही मिलता

है। जैसे कि रामायण के सन्दर्भ में जब राजा दशरथ अविवाहित व यौवनावस्था में थे तो उनके एक बाण से श्रवण कुमार की मृत्यु हो जाती है परिणामस्वरूप श्रवणकुमार के माता-पिता उसे शाप देते हैं और यही शाप राम के वनवास गमन के समय घटित होकर सामने आता है और पुत्र वियोग में उनकी मृत्यु हो जाती है अतः दुर्गुणोकं का फल मिलता जरूर देरी से है लेकिन मिलता अवश्य ही है।

यदाचरति कल्याणि शुभं वा यदि वाडशुभम्।
तदेव लभते भद्रे कर्ता कर्मजमात्मनः।।

दशरथ जी मरणावस्था में कौशल्या जी से कहते हैं– हे कल्याणि! भ्रदे! यदि कर्ता शुभ अथवा अशुभ जैसा भी आचरण करता है, उसी प्रकार वह अपने कर्म के अनुसार फल प्राप्त करता है। अतः र्या पद्य हमें बुरे कर्म करने से रोकता है। चाहे हमारे सामने कितनी भी समस्याएं क्यों न आयें हमें बुरे कर्म से बचना चाहिए।

मातृभूमि के प्रति स्नेह–

वर्तमान में हम देखते हैं कि आज का मानव अधिक पैसे कमाने के लिए भारत भूमि पर ज्ञानार्जन करके डॉक्टरर्स, इंजीनियर्स या अन्य पद पर रहकर विदेशों में निवास करते हैं। जिसको 'ब्रेन ड्रेन' 'मस्तिष्क पलायन' या 'प्रतिभा प्रवास' कह सकते हैं। अपने भारत-भूमि से सेवा करने में मोह नहीं कर पाते हैं लेकिन रामयण के उस प्रसंग में जब भगवान राम रावण का वध कर देते हैं और लंका को जीत लेते हैं तब लक्ष्मण जी राम को वहाँ पर शासन करने के लिए कहते हैं तो भगवान् राम अपनी माता व अपनी जन्मभूमि को स्वर्ग से भी बढकर बताते हैं।

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

इसलिए रामायण का यह पद्य आज के युवाओं के लिए एक संदेश है कि हमारी मातृभूमि पर रहकर इसकी सेवा करे, चाहे पैसे कुछ कम ही मिले लेकिन मातृभूमि की सेवा का आनन्द एक अलग ही होता है।

समर्पण व त्याग की भावना–

आज का मानव ईर्ष्या, द्वेष, द्वन्द्वो से ग्रसित है। तुच्छ जमीन के लिए, कुछे पैसों के लिए भाई, भाई का शत्रु बन जाता है, लडाई-झगड़ा करता है और वे भाई जीवन-भर शत्रुता में जलते रहते हैं। इसी सन्दर्भ में रामायण का भरत व भगवान् श्रीराम का भ्रातृ-प्रेम हमें बहुत कुछ कह देता है, रामवन गमन के पश्चात् भरत राजा नहीं बनते हैं और चित्रकूट में जाकर निवास करते हैं। इस प्रकार रामायण का यह प्रसंग आज के समाज के लिए आपस में मिल-जुलकर, भ्रातृ-प्रेम, समर्पण व त्याग की भावना का सन्देश देता है।

अनन्त धैर्यशीलता–

आधुनिक समाज पर हम दृष्टिपात करते हैं तो आज मनुष्य पर थोड़ा-सा भी दुःख, कष्ट, या बाधाएं आ जाती हैं तो वह घबरा जाता है, धैर्य को त्याग देता है, कभी-कभी तो आत्महत्या के प्रति प्रवृत्त हो जाता है। लेकिन जब धैर्यशीलता की बात आती है तो रामायण के उस महान् चरित्र पर हम दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि माता सीता का पूरा जीवन ही दुःखमय था, जब जन्म हुआ तो भूमि से, स्वयंवर के समय धनुष-विवार, फिर 14 वर्ष का वनवास, वनवास में भी रावण द्वारा अपहरण, अग्निपरीक्षा, लोकापवाद के कारण फिर वनगमन, इस प्रकार माता-सीता का चरित्र तो दुःखों, कष्टों से भरा हुआ था लेकिन माता सीता ने धैर्य नहीं खोया, दुःखों से लड़ती रही, अपने सतीत्व की रक्षा की। अतः आज के व्यक्ति के सामने कितने ही दुःख आये, कष्ट आये, चाहे कैरियर निर्माण सम्बन्धी हो, विवाह सम्बन्धी बाधा हो, कोरोना वायरस या अन्य रोगों से सम्बन्धित कष्ट, बाधाएँ आयें तो हमें धैर्यशीला का परिचय देना चाहिए।

श्रद्धा व भक्ति–

अर्वाचीन मानव जैसे, जमीन-जायदाद, गाड़ी-बंगला इत्यादि अर्जन को ही अपना एकमात्र लक्ष्य समझता है, वह अपने ईश्वर, गुरुजनों, माता-पिता में श्रद्धा व भक्ति को भुलाकर केवल अपने जीवन को व्यतीत करता है। परमात्मा को केवल भय या डर के कारण उसकी पूजा करता है और अनेक तनाव, द्वन्द्वों व संघर्षों में अपने जीवन या यापन करता है। इसी सन्दर्भ में रामायण में वीर, श्रेष्ठ, महावीर हनुमान जी का चरित्र हमें अपने ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा, समर्पण व भक्ति का सन्देश देता है। इस प्रकार हम समाज के लोगों को भी अपने ईश्वर, गुरुजनों व माता-पिता में अनन्त श्रद्धा व भक्ति रखनी चाहिए ताकि हमारा जीवन दुःखों से, तनावों से दूर रहे।

इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रामायण हमारे समाज के मनुष्यों को अनेक कष्टों, दुःखों से उबारने के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। आज हमें जरूरत है इसके अनेक चरित्रवान्, धार्मिकवान् पात्रों को समझकर, उनमें श्रद्धा रखकर उनके चरित्रों को अपने जीवन में उतारकर आगे बढें जिससे हमारा जीवन हमेशा उन्नति के पथ पर हमेशा अग्रसर होता रहे।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

श्री तुलसीराम रामनारायण रा.उ.मा.विद्यालय,
शोभासर, चूरू